भजन

तर्ज–वोह देखो जला घर किसी का

हम तो इश्क की बाजी हैं हारे, खो गए है अपने वो नजारे
अब तू ही बता ए मेरे पिया, कहां जायें इश्क के मारे

1– इधर रो रहीं तेरी रूहें, उधर तुम भी तो रो रहे हो
ले तो आये हो हमको यहाँ, पर अब पशेमां खुद हो रहे हो
ये अंगना के लाड किससे करें, अब तूं ही बता प्राण प्यारे

2–हंसना रोना है तेरे हुकम से,तड़पना मिलना है तेरे हुकमसे
रूह की रहनी करनी हुकम से,तो गुनाह क्यूं है रूहों के सिर पे
दुखी होंगे भला पिया कब तलक, हम गैर नहीं तन तुम्हारे

3– जिन नैनों में तुम थे समाये, अब उन नैनों में इश्क नहीं है
चाहे बैठे हो सामने मेरे, फिर भी मिलने की चाहत नहीं है
तेरी वाणी का भी नहीं होता असर, कैसे हो गए हैं दिल ये हमारे